



पाकिस्तान में एससीओ अधिकारियों की बैठक में भाग लेगा भारत, पीएम मोदी को भी मिल सकता है न्योता

भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के बीच एक बड़ी खबर सामने आई है जिसमें बताया जा रहा है कि SCO बैठक में भाग लेने के लिए भारत के प्रतिनिधि पाकिस्तान जाएंगे। पीएम नरेंद्र मोदी को भी जल्द न्योता मिल सकता है।

(जीएनएस)। नई दिल्ली: सरकारी सूत्रों के मुताबिक, भारत शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के नेशनल कोऑर्डिनेटर्स की उस बैठक में हिस्सा लेगा, जिसकी मेजबानी पाकिस्तान 28 से 30 सितंबर के बीच करेगा। सचिन पाराशर की रिपोर्ट के अनुसार, इस बैठक में पाकिस्तान की अध्यक्षता में होने वाले कार्यक्रमों के कैलेंडर को मंजूरी मिलने की उम्मीद है। इन कार्यक्रमों का समापन 'काउंसिल ऑफ हेड्स ऑफ स्टेट' समिट के साथ होगा, जिसके लिए इस्लामाबाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सभी सदस्य देशों के नेताओं को न्योता भेजेगा।

भारत 2017 में इस समूह का पूर्ण सदस्य बना

भारत 2017 में इस SCO समूह का पूर्ण सदस्य बना। तब से भारत ने रउड

काँजपा को अब प्रधानमंत्री मोदी के इस्तीफे के लिए आंदोलन करना चाहिए: केजरीवाल



नयी दिल्ली, आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को कहा कि कॉंकरोच जनता पार्टी (काँजपा) को अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस्तीफे की मांग को लेकर आंदोलन करना चाहिए। 'प्रतिदिन टाइम कॉन्क्लेव' में केजरीवाल ने कहा, हूपहले आपने धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की। अब आप मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। मैं कहता हूँ कि आगे बढ़िए और सीधे बांस के इस्तीफे की मांग कीजिए।

कांग्रेस संवैधानिक संस्थाओं पर आरोप लगाने के बजाय अपनी राजनीतिक कमजोरियों पर आत्ममंथन करे : भाजपा

(जीएनएस)। लखनऊ, भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर संवैधानिक संस्थाओं को लेकर भ्रम फैलाने और अपनी राजनीतिक एवं संगठनात्मक कमजोरियों से जनता का ध्यान भटकाने का आरोप लगाया है। भाजपा ने कहा कि कांग्रेस को लगातार मिल रही राजनीतिक चुनौतियों के बीच संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाने के बजाय अपनी राजनीतिक और संगठनात्मक स्थिति पर आत्ममंथन करना चाहिए। पार्टी ने कहा कि प्रशासनिक और संवैधानिक विषयों को राजनीतिक मुद्दा बनाकर जनता के बीच भ्रम पैदा करने से कांग्रेस की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। भाजपा का आरोप है कि कांग्रेस

रांका की हिरासत से छूटने के बाद कॉंकरोच जनता पार्टी ने हिमंत बिस्वा सरमा को चुनौती दी, कहा-असम में अभी शुरूआत है

(जीएनएस)। गुवाहाटी, असम में निर्धारित बैठक से पहले कॉंकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के सह-संयोजक आशुतोष रांका और उनके 40 से अधिक कार्यकर्ताओं को पुलिस द्वारा हिरासत में लिए जाने के मामले ने राजनीतिक विवाद का रूप ले लिया है। रिहाई के बाद रांका ने मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को चुनौती देते हुए कहा कि असम के कॉंकरोच अभी शुरू हो रहे हैं। उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ रात्रिभोज की तस्वीर भी सामाजिक माध्यम पर साझा की। इससे पहले रांका ने कहा था कि असम पुलिस की कथित गैर-कानूनी हिरासत आखिरकार समाप्त हो गई है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, रांका और अन्य

की गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया है; प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलनों में शामिल होते रहे हैं और विदेश मंत्री



डॉक्टर एस. जयशंकर सरकार प्रमुखों की बैठकों में भाग लेते रहे हैं। उम्मीद है कि आलोक डिमरी सोमवार से शुरू रही हो नेशनल कोऑर्डिनेटर्स की बैठक में शामिल होंगे।

सीएम धामी ने की उत्तराखंड में फंसे 179 ट्रेकर्स के बचाव अभियान की समीक्षा, चारधाम यात्रा पर भी दिए निर्देश

(जीएनएस)। देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपने दिल्ली प्रवास से लौटते ही सीधे राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र, आईटी पार्क पहुंचे और प्रदेश के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में हाई एल्टीट्यूड ट्रेकिंग के दौरान फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स के लिए संचालित राहत एवं बचाव अभियान की स्वयं समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने आपदा की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अधिकारियों से रेस्क्यू ऑपरेशन की अद्यतन जानकारी ली और फंसे हुए प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षित वापसी को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर विभिन्न जनपदों में फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स की संख्या, उनके वर्तमान लोकेशन, अब तक किए गए रेस्क्यू तथा शेष लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए की जा

भारत-पाकिस्तान के अधिकारी एक-दूसरे देशों का दौरा करते रहे हैं एक दशक से कोई ठोस द्विपक्षीय



बातचीत न होने के बावजूद, भारत और पाकिस्तान के अधिकारी रउड से जुड़ी एक्सरसाइज के लिए एक-दूसरे के देशों का दौरा करते रहे हैं। हालांकि, मुख्य सवाल यह है कि क्या मोदी

सीएम धामी ने की उत्तराखंड में फंसे 179 ट्रेकर्स के बचाव अभियान की समीक्षा, चारधाम यात्रा पर भी दिए निर्देश

(जीएनएस)। देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपने दिल्ली प्रवास से लौटते ही सीधे राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र, आईटी पार्क पहुंचे और प्रदेश के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में हाई एल्टीट्यूड ट्रेकिंग के दौरान फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स के लिए संचालित राहत एवं बचाव अभियान की स्वयं समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने आपदा की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अधिकारियों से रेस्क्यू ऑपरेशन की अद्यतन जानकारी ली और फंसे हुए प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षित वापसी को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर विभिन्न जनपदों में फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स की संख्या, उनके वर्तमान लोकेशन, अब तक किए गए रेस्क्यू तथा शेष लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए की जा



एवं भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए उपलब्ध सभी संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जाए। बैठक में सचिव आपदा प्रबंधन विनोद कुमार सुमन ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि राज्य के विभिन्न उच्च हिमालयी क्षेत्रों में हाई एल्टीट्यूड ट्रेकिंग के दौरान कुल 179 ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स के फंसे होने की जानकारी प्राप्त हुई थी। इनमें 136 लोग उत्तरकाशी तथा 43 लोग बागेश्वर

अगले साल इस्लामाबाद में होने वाले समिट में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री के पाकिस्तान जाने से हिचकिचाने के कारण SAARC समिट की प्रक्रिया रुकी हुई है।

भारत ने पाकिस्तान के SCO अध्यक्ष बनने पर क्या कहा? भारत ने पाकिस्तान के SCO अध्यक्ष बनने पर प्रतिक्रिया भी दी थी। भारत ने कहा था कि एससीओ की अध्यक्षता संभालने के बावजूद वह एक संस्था के रूप में संगठन से जुड़ाव बनाए रखेगा। विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) सीबी जॉर्ज ने कहा था कि पाकिस्तान एससीओ की अध्यक्षता ग्रहण कर रहा है। भारत एससीओ को एक इकाई, एक महत्वपूर्ण संगठन के रूप में देखता है। जहां तक अलग-अलग देशों के साथ हमारे जुड़ाव का सवाल है, उचित समय पर उचित प्राधिकरण के द्वारा निर्णय लिया जाएगा।

सीएम धामी ने की उत्तराखंड में फंसे 179 ट्रेकर्स के बचाव अभियान की समीक्षा, चारधाम यात्रा पर भी दिए निर्देश

(जीएनएस)। देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपने दिल्ली प्रवास से लौटते ही सीधे राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र, आईटी पार्क पहुंचे और प्रदेश के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में हाई एल्टीट्यूड ट्रेकिंग के दौरान फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स के लिए संचालित राहत एवं बचाव अभियान की स्वयं समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने आपदा की स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अधिकारियों से रेस्क्यू ऑपरेशन की अद्यतन जानकारी ली और फंसे हुए प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षित वापसी को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर विभिन्न जनपदों में फंसे ट्रेकर्स एवं माउंटेनियर्स की संख्या, उनके वर्तमान लोकेशन, अब तक किए गए रेस्क्यू तथा शेष लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए की जा

'1981 का वो खत और 1991 का लहलुहान चेहरा'.. अशोक सिंघल की जन्मशती पीएम मोदी की भावुक श्रद्धांजलि

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने विश्व हिंदू परिषद के दिवंगत नेता अशोक सिंघल की जन्मशती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। पीएम ने कहा कि आयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण अशोक सिंघल जैसे उन दिग्गजों के कारण ही संभव हो सका, जिन्होंने इसे साकार करने के प्रयास में निस्वार्थ भाव से खुद को समर्पित कर दिया था। सामाजिक सौहार्द के प्रतीक प्रधानमंत्री मोदी ने अपने आलेख में लिखा कि अशोक सिंघल को विचारों की असाधारण स्पष्टता का वरदान प्राप्त था। उनका दृढ़ विश्वास था कि देश का समाज सौहार्दपूर्ण होना चाहिए और भाईचारे के संदेश को फिर से मजबूती से स्थापित किया जाना चाहिए।

पीएम मोदी ने पत्र में बोट क्लब रैली का जिक्र किया

पीएम मोदी ने अपने पत्र में कहा, '1991 में बोट क्लब रैली में उनके संबोधन को कौन भूल सकता है? या आंदोलन के चरम पर लहलुहान अशोक जी को वह तस्वीर।

आज अगर अयोध्या में भव्य राम मंदिर है, तो यह उनके जैसी विभूतियों की वजह से है, जिन्होंने इसे संभव बनाने के प्रयास में निस्वार्थ भाव से

नेपाल में फिर बाढ़ और भूस्खलन से 21 की मौत, नदियां खतरनाक स्तर के ऊपर

(जीएनएस)। काठमाण्डू, नेपाल में पिछले दिनों भोटेकोशी और त्रिशुली नदी में आई बाढ़ का दुख अभी खत्म नहीं हुआ था, पिछले कुछ दिनों से पहाड़ी देश में हो रही बारिश ने एक बार फिर जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। नेपाल में बाढ़ और भूस्खलन की वजह से पिछले कुछ दिनों में 21 लोगों की मौत हो गई है। लगातार बारिश की वजह से नदियों का जलस्तर भी खतरनाक स्तर पर है। अधिकारियों ने बारिश के दौरान सतर्क रहने का आग्रह किया है।

शनिवार रात पालपा जिले के मथागढ़ी ग्रामीण नगरपालिका में भूस्खलन से एक घर मलबे में दब गया, जिससे 5 लोगों की मौत हो गई। सभी शव रविवार सुबह बरामद किए गए।

खुद को समर्पित कर दिया था। पीएम ने आगे कहा कि अगर आज वो यहां होते तो अयोध्या में राम मंदिर को आकार लेते देखकर वो सबसे ज्यादा खुश होते।

सामाजिक समानता और समरसता के लिए कार्य प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि



सिंघल ने सामाजिक एकता और समानता को मजबूत करने की दिशा में जीवन भर काम किया। वे मानते थे कि समाज में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा और सम्मान का हकदार है।

पीएम मोदी ने बताया कि यह अशोक सिंघल की ही सोच थी कि अयोध्या में राम मंदिर की पहली ईंट बिहार के जमीनी स्तर पर काम करने

वाले विहिप कार्यकर्ता कामेश्वर चौपाल द्वारा रखी जाए, जो समाज के वंचित वर्ग से आते थे।

मोदी ने कहा, 'काशी में एक धर्म संसद में उन्होंने डोम राजा को सम्मानित करने का निर्णय लिया और विभिन्न सामुदायिक प्रयासों के तहत उनके साथ काम किया।'



प्रधानमंत्री ने कहा कि सिंघल का मन लगातार इस बात पर विचार करता रहता था कि समाज के हाशिये पर मौजूद लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है।

सिंघल की कठिन यात्राओं का किया जिक्र

पीएम मोदी ने सिंघल को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध एक महान व्यक्तित्व बताया हुए कहा कि उन्होंने कई दशकों तक अशोक सिंघल को

नेपाल में फिर बाढ़ और भूस्खलन से 21 की मौत, नदियां खतरनाक स्तर के ऊपर

इसके अलावा, पिछले 4 दिनों में बाढ़, भूस्खलन, बिजली गिरने और वारिश से जुड़ी घटनाओं में 16 मौत हो गई, जिससे कुल मृतकों की

संख्या 21 हुई है। नेपाल में पिछले 5 दिनों में मानसून से संबंधित 439 घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि 1,284 लोगों

पार कर गया और शनिवार रात को बुटवल में 6 घरों को बहा दिया। चितवन जिले में नारायणी नदी और रीयू नदी रविवार तड़के खरबे

दिन-रात काम करते देखा। सिंघल अक्सर देश के सुदूर इलाकों की लंबी और कठिन यात्राएं किया करते थे।

पीएम मोदी ने गुजरात में किए सिंघल के कामों को याद करते हुए बताया कि सिंघल को गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों की यात्रा करने का विशेष जुनून था। 2001 के कच्छ भूकंप के बाद उनके साथ का अनुभव अविस्मरणीय रहा।

जब भी कोई प्राकृतिक आपदा आती थी, वे खुद राहत कार्यों के लिए पहुंचते थे या कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते थे। उन्होंने कहा, 'दूसरों के प्रति करुणा और उनकी देखभाल की यह भावना अशोक जी के जीवन में बहुत कम उम्र में ही आ गई थी।'

पीएम ने सिंघल के साथ बिताए पल किए याद

पीएम मोदी ने अशोक सिंघल के साथ बिताए पल याद करते हुए कहा, 'मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे अशोक जी के साथ अनगिनत बार बातचीत करने और उनका स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला।

ऐसी शुरूआती घटनाओं में से एक 1981 की है, जब मैं एक युवा कार्यकर्ता के रूप में मुझे सौंपे गए संगठनात्मक दायित्वों को निभा रहा था।'

नेपाल में फिर बाढ़ और भूस्खलन से 21 की मौत, नदियां खतरनाक स्तर के ऊपर

के निशान से ऊपर बह गई। देवघाट पर नारायणी नदी का जलस्तर 9.23 मीटर (खतरे का निशान 9 मीटर) तक पहुंच गया, जबकि रीयू नदी का जलस्तर 3.92 मीटर (खतरे का निशान 3.8 मीटर) होग था।

नेपाल और तिब्बत सीमा पर 26 अगस्त को आई विनाशकारी बाढ़ में अब तक 1,453 लोगों की मौत हुई है, जबकि 5,000 से अधिक लोग लापता हैं। बचाव दल ने 10,000 से अधिक लोगों को बचाया है।

नेपाल में बाढ़ से नुकसान का आंकड़ा 48,000 करोड़ रुपये से अधिक है। नेपाली अधिकारियों ने बाढ़ और भूस्खलन की आशंका वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से बारिश जारी रहने के दौरान सतर्क रहने का आग्रह किया है।



गरवी गुजरात हिन्दी



JioTV CHENNAL NO. 2002



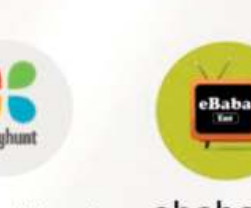
Jio Air Fiber



Jio tv +



Jio Fiber



Daily Hunt



ebaba Tv



Dish Plus



DTH live OTT



Rock TV



Airtel



Amezone Fire



Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही गरवी गुजरात हिंदी चैनल देखिये

सम्पादकीय

चुनाव आयुक्तों की असहमति से चुनाव की निगरानी करने वाली संस्था पर सवाल

चुनाव आयोग के भीतर से जो खबरें लोक हुई हैं और इंडियन एक्सप्रेस में छपी हैं वह बेहद चिंताजनक तो है ही पर उससे कहीं अधिक गंभीर इसलिए है क्योंकि वह देश की उस संवैधानिक संस्था की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करती है जिस पर स्वतंत्र, निष्पक्ष व पारदशा चुनाव कराने और लोकतंत्र में जनता का भरोसा बनाए रखने की भी अहम जिम्मेदारी है। भारत में चुनाव आयोग के भीतर कथित मतभेद की रिपोर्ट की चर्चा पूरे देश में तो हो ही रही है पर अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में भी यह छाई हुई है। इस रिपोर्ट के बाद पूरे देश में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार चर्चा में भी आ गए हैं।

पूरे देश में उनके खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। वहीं अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में इस पर टिप्पणियां छप रही हैं। अमेरिकन मीडिया आउटलेट ब्लूमबर्ग ने इस मुद्दे पर टिप्पणी करते हुए लिखा: एसआईआर में योग्य मतदाताओं के नाम हटाने और इससे चुनावी नतीजों पर असर पड़ने की पूरी-पूरी आशंका है। लूमबर्ग ने लिखा: सितंबर के अंत में इस मुद्दे पर फिर सवाल उठे, जब अखबार इंडियन एक्सप्रेस ने खबर दी कि तीन चुनाव आयुक्तों में से दो ने 10 महीने की अवधि में कम से कम 14 बार इस प्रक्रिया को लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त के सामने चिंता जताई थी। चुनाव आयोग ने इस खबर का बहरहाल खंडन किया है। कथित चुनाव आयुक्तों की असहमति ने चुनाव की निगरानी करने वाली संस्था पर और सवाल खड़े किए हैं। पिछले एक साल में राज्य विधानसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भारतीय जनता पाटा की लगातार जीत के बाद मतदाता सूची में सफाई का मुद्दा राजनीतिक रूप से बेहद संवेदनशील हो गया है। अप्रैल में पश्चिम बंगाल चुनाव से पहले मतदाता सूची से करीब लाखों नाम हटाए गए थे। इसके बाद बीजेपी ने पहली बार यहां बड़ी जीत हासिल की। पिछले साल बिहार में भी लाखों नाम काटे गए थे। पिछले साल बिहार विधानसभा चुनाव से पहले इसी तरह मतदाता सूची का पुनरीक्षण किया गया था। मतदाताओं के नाम जोड़ने और हटाने के साथ मतदाता सूची के प्रबंधन वाले सिस्टम के बढ़ते वैदीयकरण को लेकर चिंताओं पर ब्लूमबर्ग ने लिखा: दोनों आयुक्तों ने यह भी कहा कि कुछ पैलस लिए गए और आदेश जारी किए गए, लेकिन इसकी जानकारी उन्हें नहीं दी गई। रिपोर्ट के अनुसार एसआईआर के दौरान करीब 13 करोड़ लोगों के नाम शुरूआती वोटर लिस्ट से हटा दिए गए। इनमें से कई लोगों के नाम हटाए जाने के खिलाफ अपील की गई जो अधिकतर अभी भी पेंडिंग है। अखबार ने लिखा: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 2029 तक लोकसभा चुनाव में वोट डालने वाले मतदाताओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। लेकिन कुछ ही महीने बाद भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृह राज्य गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनाव उनकी लोकप्रियता के लिए अहम राजनीतिक टेस्ट होगा।। कतर के न्यूज आउटलेट अल-जजीरा ने चुनाव आयोग से जुड़ी खबर प्रकाशित होने के बाद कांक्रोच जनता पाटा के विरोध प्रदर्शन का ज़िन्न करते हुए लिखा: कांक्रोच जनता पाटा के युवा आंदोलनकारियों ने चेतावनी दी है कि अगर देश के मुख्य चुनाव आयुक्त शनिवार तक इस्तीफा नहीं देते हैं तो वह देश भर में विरोध प्रदर्शन शुरू करेंगे। अखबार न्यूयार्क टाइम्स ने भी इस मुद्दे पर विस्तृत खबर छपी है। एसआईआर से लेकर विपक्षी पार्टियों में विभाजन व चुनावी सिंबल प्रीज करने और उन्हें मान्यता होने के मुद्दे तक, हर जगह विपक्ष को चुनाव आयोग पर सवाल उठाने का एक मौका बैठे-बिठाए मिल गया है। यह मुद्दा हमें लगता है कि थमने वाला नहीं है और अभी कई आंदोलन देखने को मिलेंगे। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जो आरोप लगाए हैं वह भी स्पष्टीकरण की मांग करते हैं। यहां सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस दीपांकर दत्ता की टिप्पणी भी बेहद अहम है। एक संवैधानिक संस्था पर इस प्रकार के आरोप बेहद चिंताजनक हैं, जो सवाल उठ रहे हैं उनका जवाब मिलना ही चाहिए, क्योंकि चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पूरे लोकतांत्रिक तंत्र के भरोसे का प्रश्न भी है।

लखपति दीदी बनाने में मददगार बन रही छत्तीसगढ़ की महतारी वंदन योजना

महतारी वंदन योजना - छत्तीसगढ़ शासन

लखपति दीदी बनाने में मददगार

महिला स्व-सहायता समूह - किराने दुकान

कुक्कुट पालन - प्रतिक्रिया आय

सिलाई-कढ़ाई - कौशल विकास

₹ 1,000 प्रतिमाह
मासिक महादत्ता राशि

68 लाख लाभार्थी
राज्यभर में लाभार्थी महिलाएं

13.85 लाख लखपति दीदी
अधिक रूप से सरकारी महिलाएं

• महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण • स्व-सहायता समूहों को प्रोत्साहन • सामाजिक आजीविका में वृद्धि • स्व-सहायता समूहों को प्रोत्साहन • आत्मनिर्भरता की ओर

महिला एवं बाल विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

धनंजय राठौर
महतारी वंदन योजना के तहत मिलने वाली 1,000 रुपये की मासिक राशि छत्तीसगढ़ की लाखों महिलाओं के लिए घर-गृहस्थी में मदद से कहीं ज्यादा साबित हो रही है। यह राशि कर्ज, स्वयं सहायता समूहों और आजीविका के अवसरों के साथ मिलकर महिलाओं की आय का स्थायी जरिया बन रही है।

महतारी वंदन योजना राज्य की सबसे बड़ी योजनाओं में से एक है, जिसमें लाभभग 68 लाख महिला लाभार्थी शामिल हैं। इस योजना के तहत लाभार्थियों को अब तक 31 किस्तों में 20,075.38 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं। इस साल राज्य के बजट में इस योजना के लिए 8,200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

इसी योजना की पूरक महतारी शक्ति ऋण योजना के तहत

एक बहुत सुंदर सुभाषित है, वृक्ष कबहुँ नहीं फल भंखै, नदी न संचै नीर। परमारथ के कारने, साधुध धरा शरीर। इसका मतलब है कि पेड़ कभी अपने फल स्वयं नहीं खाता, नदी अपना जल अपने पास नहीं रखती। इसी तरह, संत स्वभाव के लोग भी स्वयं को प्राथमिकता ना देते हुए, सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं, अपना जीवन लोक कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं। सदियों से हमारे ऋषियों ने हमें यही सिखाया है कि मानवता के कल्याण के लिए समर्पित जीवन का महत्व व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं अधिक होता है। श्रद्धेय अशोक सिंघल का जीवन इस भावना का पुण्य उदाहरण है।

27 सितंबर से हम स्वर्गीय अशोक सिंघल का जन्म-शताब्दी वर्ष मनाने जा रहे हैं। यह एक महान विभूति के सम्मान का सुअवसर है। उन्होंने आध्यात्मिक साधना, सांस्कृतिक जागरण और दशकों तक समर्पित भाव से समाज एवं संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाया।

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मुझे स्वर्गीय अशोक के साथ लंबे समय तक कार्य करने, उनसे सीखने, उनसे संवाद करने और उनका स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला। मुझे 1981 का एक प्रसंग याद आता है। उस समय मैं एक युवा कार्यकर्ता के तौर पर संगठन की ओर से मिली जिम्मेदारियां निभा रहा था। तब मुझे अशोक का हाथ से लिखा एक पत्र मिला। उन्होंने पत्र में आने वाले एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी थी और मुझे कुछ जिम्मेदारियां सौंपी थीं। उस समय अशोक सिंघल से पत्र पाना, मेरे लिए बहुत विशेष और यादगार क्षण बन

गया था।

मैंने उन्हें कई दशकों तक दिन-रात काम करते देखा। वे देश के दूर-दराज के क्षेत्रों की लंबी और कई बार कठिन यात्राएं किया करते थे। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में जाना उन्हें विशेष रूप से प्रिय था। वे लगातार इस पर चिंतन करते थे कि समाज के वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है। जब भी देश में कहीं प्राकृतिक आपदा आती, तो अशोक सिंघल सबसे पहले वहां पहुंचने वालों में होते या फिर प्रभावित लोगों की सहायता के लिए कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन देते। वर्ष 2001 में कच्छ में आए भूकंप के बाद उनके साथ का मेरा अनुभव अविस्मरणीय बन गया।

आदरणीय अशोक अत्यंत प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार से थे। उनके पिता महावीर की एक प्रशासक के रूप में पहचान थी। उनके एक भाई बी.पी. सिंघल पुलिस अधिकारी बने और बाद में संसद सदस्य भी रहे। दूसरे भाई वी.पी. सिंघल त्रिपुरा के तब मुख्य सचिव बने, जब यह नया राज्य बना था। परिवार के अन्य सदस्यों ने भी कॉमर्स और कृषि के क्षेत्र में सफलता हासिल की। लेकिन शुरू से ही अशोक का झुकाव बिल्कुल अलग दिशा में था। बहुत कम उम्र में ही उनके व्यवहार में दूसरों के प्रति करुणा और सेवा की अद्भुत भावना दिखने लगी थी। वे चाहते थे कि भारत अशोक का हाथ से लिखा एक पत्र मिला। उन्होंने पत्र में आने वाले एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी थी और मुझे कुछ जिम्मेदारियां सौंपी थीं। उस समय

अशोक सिंघल से पत्र पाना, मेरे लिए बहुत विशेष और यादगार क्षण बन गया था। मैंने उन्हें कई दशकों तक दिन-रात काम करते देखा। वे देश के दूर-दराज के क्षेत्रों की लंबी और कई बार कठिन यात्राएं किया करते थे। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में जाना उन्हें विशेष रूप से प्रिय था। वे लगातार इस पर चिंतन करते थे कि समाज के वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है। जब भी देश में कहीं प्राकृतिक आपदा आती, तो अशोक सिंघल सबसे पहले वहां पहुंचने वालों में होते या फिर प्रभावित लोगों की सहायता के लिए कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन देते। वर्ष 2001 में कच्छ में आए भूकंप के बाद उनके साथ का मेरा अनुभव अविस्मरणीय बन गया।

तंबाकू नियंत्रण में मेघालय ने रचा इतिहास, 531 गांव बने तंबाकू-मुक्त

0-समुदाय की भागीदारी से दो जिलों में 1,039 ग्राम स्वास्थ्य परिषदें अभियान से जुड़ीं, दो साल में तंबाकू-मुक्त गांवों की संख्या 264 से बढ़कर 531 हुई

तेज़पुर, पूर्वोत्तर राज्य मेघालय ने समुदाय आधारित तंबाकू नियंत्रण के

क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। राज्य के दो जिलों में 500 से अधिक ग्राम स्वास्थ्य परिषदों ने 'तंबाकू-मुक्त गांव' कार्यक्रम के तहत निर्धारित मानकों को पूरा करते हुए तंबाकू-मुक्त होने का प्रमाणित दर्जा हासिल किया है। इस उपलब्धि के

बहुत आत्मीयता थी। इससे भारत के सांस्कृतिक लोकाचार की उनकी समझ और समृद्ध हुई। समाज के लिए कुछ करने का उनका संकल्प भी और दृढ़ हुआ। दूसरों के लिए जीने की यही



ललक उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ले आई। उनको जो भी जिम्मेदारी मिली, उसे उन्होंने पूरे उत्साह, अनुशसन और कर्तव्यभाव से निभाया।

अशोक सिंघल ने अपने निरंतर प्रयास और अथक परिश्रम से अनेक संस्थाओं और आंदोलनों को मजबूत किया। अपनी ओजस्वी वाणी और अभिव्यक्ति की अद्भुत शैली से वे पूरी सभा को मंत्रमुग्ध कर देते थे। अपने साथी कार्यकर्ताओं के प्रति वे अत्यधिक स्नेह रखते थे। जो भी उनके संपर्क में आता, वह उनकी सदागी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। संत समाज के साथ उनके संबंध बहुत प्रगाढ़ थे। देशभर के साधु-संतों के बीच भी उनका काफी सम्मान था। संतगण उनके परामर्श को महत्व देते थे और उनकी बातों को पूरे आदरभाव से सुनते थे।

मेरी स्मृति में ऐसी दो घटनाएं उभर रही हैं, जिनसे अशोक सिंघल के विराट व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। पहली घटना 1993 की है। विश्व

इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि पूर्वोत्तर के कई राज्यों में तंबाकू सेवन की दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है। ग्लोबल एडल्ट



वर्तमान में यह कार्यक्रम ईस्ट खासी हिल्स और वेस्ट जयंतिया हिल्स जिलों में चलाया जा रहा है। इसके तहत 1,039 ग्राम स्वास्थ्य परिषदें, जो कुल परिषदों का करीब 80 प्रतिशत हैं, तंबाकू नियंत्रण के प्रयासों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। कार्यक्रम के दो वर्षों में तंबाकू-मुक्त दर्जा हासिल करने वाली परिषदों की संख्या 264 से बढ़कर 531 हो गई है। यह अभियान में शामिल परिषदों का करीब 41 प्रतिशत है।

मेघालय में शुरू की गई यह पहल

टोबैको सर्वे के दूसरे चरण के आंकड़ों के अनुसार, त्रिपुरा में वयस्कों के बीच तंबाकू सेवन की दर 64.5 प्रतिशत, मिजोरम में 58.7 प्रतिशत, मणिपुर में 55.1 प्रतिशत, असम में 48.2 प्रतिशत, मेघालय में 47 प्रतिशत, अरुणाचल प्रदेश में 45.5 प्रतिशत और नागालैंड में 43.3 प्रतिशत रही। इसके मुकाबले देश का राष्ट्रीय औसत 28.6 प्रतिशत था।

पूर्वोत्तर में तंबाकू के अधिक इस्तेमाल का असर स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। तंबाकू सेवन से जुड़ी

आंदोलन के चरम पर लहलुहान और ऐतिहासिक तस्वीर भला किसकी स्मृति से मिट सकती है? आज अयोध्या में भव्य राम मंदिर है, तो इसके पीछे अशोक जैसी विभूतियों का निस्वार्थ समर्पण है, जिन्होंने इसे संभव बनाने के प्रयास में स्वयं को पूरी तरह खपा दिया। आज यदि अशोक हमारे बीच होते तो अयोध्या में राम मंदिर को देखकर वो सबसे अधिक भावुक एवं प्रसन्न होते।

स्वर्गीय अशोक सिंघल के विचार बहुत सुलझे हुए थे। वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि समाज में समरसता के साथ ही भाईचारे का संदेश मजबूत होना चाहिए। उन्होंने सामाजिक एकता और समानता के लिए निरंतर कार्य किया। उनका साफ मत था कि समाज में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा व सम्मान का अधिकारी है। यही वजह थी कि उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर की पहली ईंट रखने को लेकर अपने विचार को स्पष्ट रूप से रखा। उन्होंने ही कहा था कि यह पुनीत कार्य बिहार के वीएचपी कार्यकर्ता और वंचित वर्ग से आने वाले कामेश्वर चौपाल के हाथों से हो। काशी में एक धर्म संसद के दौरान उन्होंने डोम राजा को सम्मानित करने का फैसला किया और कई सामुदायिक अभियानों में उनके साथ मिलकर काम किया।

राष्ट्र-निर्माण के साथ ही अशोक सिंघल के दो ऐसे प्रिय क्षेत्र थे, जो उनके हृदय के अत्यंत निकट थे। शिक्षा (विशेषकर वैदिक शिक्षा) और संगीत, इन दोनों से उनका गहरा लगाव था। बाराणसी के सांसद के रूप में मुझे इस बात पर अत्यंत गर्व की

बीमारियों में मुंह का कैंसर भी प्रमुख है। ऐसे में गांवों और समुदायों को सीधे अभियान से जोड़कर तंबाकू की खपत कम करने का प्रयास महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

मेघालय के कार्यक्रम की खासियत यह है कि किसी गांव को केवल औपचारिक घोषणा के आधार

पर तंबाकू-मुक्त नहीं माना जाता। इसके लिए ग्राम स्वास्थ्य परिषदों की निर्धारित गतिविधियों को जमीन पर लागू करना होता है। इनमें तंबाकू-मुक्त गांव के लिए नोडल अधिकारी की नियुक्ति, जागरूकता कार्यक्रम, सामुदायिक प्रस्ताव पारित करना, सार्वजनिक स्थानों को तंबाकू-मुक्त बनाना और शिक्षण संस्थानों के आसपास तंबाकू उत्पादों की बिक्री रोकना शामिल है।

किसी ग्राम स्वास्थ्य परिषद को तंबाकू-मुक्त का प्रमाणित दर्जा तब दिया जाता है, जब वह निर्धारित छह गतिविधियों में से कम से कम पांच को सफलतापूर्वक पूरा कर उनका अनुपालन प्रदर्शित करे। इसके बाद कार्यक्रम के निगरानी व्यवस्था के माध्यम से इन उपायों की पुष्टि की जाती है।

समुदाय के नेतृत्व वाले इस अभियान ने स्वास्थ्य अधिकारियों और अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थाओं का भी ध्यान आकर्षित किया है। कार्यक्रम के पहले वर्ष में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के वरिष्ठ अधिकारियों ने अभियान में शामिल गांवों का दौरा कर इसके जमीनी क्रियान्वयन की समीक्षा की।

संबंध हेल्थ फाउंडेशन के प्रबंधक, अभिषेक सुनार के अनुसार, कार्यक्रम के तहत अब तक 6,372 से अधिक तंबाकू-विरोधी गतिविधियां आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें करीब 54,956 समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया है। अभियान का असर सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ घरों में भी देखने को मिल रहा है। शैला प्रखंड की माचमलुह ग्राम स्वास्थ्य परिषद की अध्यक्ष के अनुसार, गांव के सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू के इस्तेमाल में अनुमानित 40 से 50 की सिल्वर मेडलस्ट उब्जेकिस्तान की प्रतिशत की कमी आई है। वहीं घरों के भीतर, खासकर बच्चों की मौजूदगी में धूम्रपान में 60 से 70 प्रतिशत तक गिरावट देखी गई है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मेघालय के राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम की राज्य नोडल अधिकारी डॉ. आदरणीय अशोक को निकट से जानने वालों को पता है कि वे कितना सुंदर गाते थे। मुझे नागपुर की उन बैठकों की याद आती है, जिसमें वे 'एकल गीत' गाया करते थे। उनका गायन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता था और पूरी बैठक में नई ऊर्जा भर जाती थी। वर्ष 2015 में उनके 90वें जन्मदिवस समारोह का एक वीडियो खूब वायरल हुआ था, जिसमें उन्होंने 'हे मातृभूमि मेरी, हे पितृभूमि मेरीइ गाकर सभी को चौंका दिया था।

स्वर्गीय अशोक सिंघल ने अपने जीवन में हर क्षण इस महान राष्ट्र के उत्कर्ष का ही स्वप्न ही रखा था। उनके आदर्शों से आज भी हमें ये प्रेरणा मिलती है। उनकी जन्मशती के इस पावन अवसर पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिक से अधिक युवा उनके विराट व्यक्तित्व और महानता से परिचित हों। आइए, हम अपने राष्ट्र और देशवासियों के लिए अशोक सिंघल के सपनों को साकार करने के संकल्प को एक बार फिर दोहराएं।

नबनीता डी. मॉरी ने कहा कि इस अभियान में समुदाय की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार, लोग गांव की बैठकों, स्वयं सहायता समूहों की बैठकों और अन्य सामुदायिक मंचों पर तंबाकू से जुड़े मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं।

डॉ. मॉरी के अनुसार, गतिविधियों को संचालित करने और सत्यापित तंबाकू-मुक्त दर्जा हासिल करने वाली ग्राम स्वास्थ्य परिषदों की बढ़ती संख्या यह दशार्ती है कि तंबाकू नियंत्रण अब सामुदायिक जिम्मेदारी बनता जा रहा है। दो जिलों में प्रायोगिक स्तर पर, शुरू किए गए इस कार्यक्रम को अब पूरे मेघालय में विस्तार देने पर विचार किया जा रहा है।

'तंबाकू-मुक्त गांवइ पहल राज्य में चल रहे व्यापक तंबाकू नियंत्रण अभियान का हिस्सा है। मेघालय में 'तंबाकू-मुक्त शिक्षण संस्थानइ पहल के साथ सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम के तहत निर्धारित उपायों को भी लागू किया जा रहा है।

संबंध हेल्थ फाउंडेशन अपने डिजिटल कार्यक्रम क्रियान्वयन मॉडल के माध्यम से इस अभियान को सहयोग दे रहा है। इसके तहत तकनीक, समुदाय को संगठित करने, प्रशिक्षण और आंकड़ा आधारित निगरानी का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि अभियान की प्रगति और परिणामों पर लगातार नजर रखी जा सके।

अभिषेक सुनार ने कहा कि भारत की करीब 80 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, इसलिए गांव और समुदाय के स्तर पर तंबाकू नियंत्रण बेहद जरूरी है। उनके अनुसार, तंबाकू-मुक्त गांव कार्यक्रम के तहत पहले वर्ष में 264 गांवों और दूसरे वर्ष में 534 गांवों को तंबाकू-मुक्त घोषित किया गया। उपलब्ध विवरण में प्रमाणित ग्राम स्वास्थ्य परिषदों की संख्या 531 बताई गई है।

उन्होंने कहा कि यह प्रगति राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मेघालय, मेघालय राज्य ग्रामीण आजीविका सोसाइटी और संबंध हेल्थ फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। डिजिटल कार्यक्रम क्रियान्वयन के माध्यम से इस अभियान के प्रगति और परिणामों पर लगातार नजर रखा जा रहा है।

पूर्वोत्तर के कई राज्यों में तंबाकू सेवन की दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।

